International Journal of Applied Research 2016; 2(4): 270-271

**ISSN Print:** 2394-7500
**ISSN Online:** 2394-5869
**Impact Factor:** 5.2
IJAR 2016; 2(4): 270-271
www.allresearchjournal.com
Received: 29-03-2016
Accepted: 30-04-2016

**Tulsi Chouhan**
Assistant Professor,
Department of History,
Vivekananda College, Delhi
University, Delhi, India

**Correspondence**
**Tulsi Chouhan**
Assistant Professor,
Department of History,
Vivekananda College, Delhi
University, Delhi, India

# राष्ट्रवाद का उदय

## Tulsi Chouhan

**प्रस्तावना**

यदि हम इतिहास पर दृष्टिपात करें तो हम पायेगे कि राष्ट्रवाद का उदय कभी भी किसी भी देश में अक्समात नहीं हुआ यह एक लम्बे समय में पूर्ण होने वाली प्रक्रिया है और भारत भी इस प्रक्रिया का अपवाद नहीं है। भारत में भी राष्ट्रवाद नामक पौधे को पनपने में पर्याप्त समय लाभ माना जाता है कि राष्ट्रवाद के उदय में पाश्चात्य शिक्षा का योगदान महत्वपूर्ण है क्योंकि पश्चिमी शिक्षा के माध्यम से भारतीय आधुनिक पश्चिमी विचारों से अवगत हो सका। इस बात से इनंकार नहीं किया जा सकता कि शिक्षा ही समाज की दशा और दिशा तय करती है और समाज में नवीन चेतना लाने में सहायक होती है। लेकिन ऐसा भी नही है कि यदि भारत में पश्चात्य शिक्षा न होती तो राष्ट्रवाद भी नहीं होता। हम चीन के राष्ट्रवाद का अध्ययन करें तो हम पाते है कि चीन के अन्दर राष्ट्रवाद का उदय हुआ लेकिन बिना पाश्चात्य शिक्षा प्रणाली के। इसी प्रकार और भी अनेक उदाहरण देखे जा सकते है।

भारतीय राष्ट्रवाद को आकार देने में ब्रिटिश शासन द्वारा भारत के प्रशासनिक एकीकरण एक महत्वपूर्ण कदम साबित हुआ। प्रशासनिक एंकीकरण के फलस्वरूप भारत के विभिन्न भाषाओं, विभिन्न प्रांतों और विभिन्न खेमों के लोग एक मंच पर आ गये। इसके साथ साथ औपनिवेशिक सरकार द्वारा किये गये शोषण से भारतीयों में हम एक है का भाव उत्पन्न लगा और यह स्पष्ट होनें लगा की जब तक हम सभी देशवासी औपनिवेशिक हुकूमत के विरूद्ध एक साथ खड़े नहीं होते तब तक भारत कभी भी स्वतंत्र नहीं हो सकता है।

किन्तु राष्ट्रीय आंदोलन के आरम्भ होने से पूर्व जिसने राष्ट्रवाद के पौधे को बीज और स्वाद दिया वह का भारत का सामाजिक धार्मिक सुधार आंदोलन। 19वीं शताब्दी में भारत महान समाज सुधारको ने समाज में प्रचलित कुरूतियाँ व धार्मिक आडम्बरों के खिलाफ आवाज उठाई ये समाज सुधार समाज का पुर्ननिर्माण प्रजातंत्र, सामाजिक तथा व्यक्तिगत समानता, तर्क, बुद्धिवाद तथा उदारवाद आदि आधारों पर करना चाहते थे। इन आंदोलन के प्रभाव में आने से जहां एक ओर लोगों में स्वतंत्र होने तथा एकीकरण का दृष्टिकोण पनपने लगा तथा इससे राष्ट्रीयता के विकास की पृष्ठभूमि तैयार हुई।

राष्ट्रवाद के उदय और विकास में प्रेस व समाचार पत्रों की भूमिका के महत्व को भी नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। भारतीय समाचार पत्रों में अंग्रेजी राज के प्रभाव और सरकार की नाकामियों का जिक्र किया जाता और अनेक बार इन समाचार पत्रों पर सरकार के द्वारा प्रतिबंध भी लगाया गया किंतु तमाम विपरीत परिस्थितियों को दर किनार करते हुए समाचार पत्रों ने जनमत निर्माण में योगदान किया। इसी प्रकार भारतीय साहित्यकारों तथा उनके साहित्य ने भी समाज को आइना दिखाने के काम के साथ-साथ समाज को एक नई दिशा देकर समाज निर्माण व राष्ट्रवाद की विचारधारा को और मजबूत किया। बंकिमचंद्र चट्टोपाध्याय, रवींद्रनाथ टैगोर, लक्ष्मीनाथ, वेजबरुआ, विष्णु शास्त्री, चिंपलुणकर, भारतेंदु हरिश्चंद्र आदि का योगदान पाश्चात्य शिक्षा से कहीं भी कम करके आंका नहीं जा सकता। इसके अतिरिक्त भारतीय राष्ट्रवादियों का अविस्मरणीय योगदान भी उल्लेखनीय है।

**References**

1. Bipan Chandra. Freedom striggle.
2. Bipan Chandra. The rise and Growth of Conomic Natioalism in India
3. Sarkar. Sumit The swadeshi Movement in Bengal
4. BL Grover. A documentary study of the british policy toward Indian Nationalism.